l eko'kh f'k{kk o f'k{kd

iue vxoky
शोध छात्रा, जे0 वी0 जैन कॉलेज सहारनपुर

Þfo"k; lkjk'kß

समावेशी शिक्षा का अर्थ है शिक्षा में सभी प्रकार के बालकों का समावेश । अर्थात समावेशी षिक्षा के अन्तर्गत विशेष आवश्यकता वाले बालकों को सामान्य बालकों के साथ ही शिक्षा दी जाती है। इन विशिष्ट बालको को सामान्य अध्यापक ही शिक्षा प्रदान करते है। समावेशी शब्द का प्रचलन 1990 के दशक के माध्यम से बढ़ा जब जून 1994 में सलमानका (स्पेन) में यूनेस्को द्वारा विशेष शैक्षिक आवश्कता पर विशेष विश्व सम्मेलन सुलभता और समता का आयोजन हुआ । इस सम्मेलन में कहा गया कि प्रत्येक बच्चे की चरित्र विशिष्टताएँ, रूचियॉ, योग्यताएँ एवं सीखने की आवश्कताएँ अनोखी होती है। अतः शिक्षा प्रणाली में इन विशिष्टताओं और आवश्यकताओं की व्यापक विविधता का ध्यान रखना चाहिये।

समावेशी शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत शिक्षकों की जिम्मेदारी और बढ़ जाती हैं क्योंकि समावेशी शिक्षा व्यवस्था में अध्यापक खुद को केवल अध्यापन कार्य तक सीमित नहीं रखता बल्कि विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकता वाले बालकों का कक्षा में उचित ढ़ंग से समायोजन करना, उनके लिए विशिष्ट शिक्षण सहायक सामग्री का निर्माण करना आदि भी कार्य करने पड़ते हैं । समावेशी शिक्षा व्यवस्था के द्वारा सामान्य अध्यापकों को बहुत लाभ भी होता है। समावेशी शिक्षा से सामान्य शिक्षक यह स्वीकार करने लगते है कि सभी विघार्थियों में कोई न कोई गुण होता है और ये गुण मिलकर अच्छी कक्षा के निर्माण में सहायक होते है तथा शिक्षक को कक्षा प्रबन्धन में आसानी होती है। सामान्य शिक्षक सभी प्रकार के बालकों को ज्ञान देनें में खुद को सक्षम बना सकतें है। इसके द्वारा सामान्य शिक्षक में सामूहिक कार्य कौशल का विकास होता है।

परन्तु सामान्य शिक्षकों को विशेष आवश्यकता वाले बालकों को पढाने की जिम्मेदारी देने से पहले उन्हें प्रशिक्षित करना चाहिये तथा सेवारत प्रशिक्षण भी दिया जाना चाहिये । जिससे अध्यापकों में ज्यादा से ज्यादा कौशलों का विकास हो सकें और वे विशेष आवश्यकता वाले बालकों की सभी शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर सकें। गुरूदेव रविन्द्र नाथ टैगोर ने भी कहा है कि, "एक अध्यापक तब तक वास्तविक अर्थों में शिक्षा नहीं दे सकता जब तक कि वह स्वयं न सीखता रहे, जो दीपक अपनी लौ को प्रज्वलित नहीं कर सकता वह दूसरे दीपक को कैसे प्रकाशित करेगा।"

ieq[k 'kCn % समावेषी शिक्षा, शिक्षक, विशेष आवश्यकता वाले बालक तथा सामान्य बालक ।

1- iLrkouk

समावेशी शिक्षा का अर्थ है शिक्षा में सभी प्रकार के बालकों का समावेश अर्थात समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत विशेष आवश्यकता वाले बालकों को सामान्य बालकों के साथ ही शिक्षा दी जाती है। समावेशी शिक्षा एक नया प्रत्यय है, इस प्रत्यय का आरम्भ इस आधार पर हुआ कि शिक्षा प्रत्येक बालक का मूल अधिकार है और प्रत्येक बालक की विशेषताएँ, रूचियाँ, योग्यता व आवष्यकता अलग–अलग होती है जिसका हमें सम्मान करना चाहिये। जब हम सभी बालकों को उनके धर्म, जाति, संस्कृति, उनकी अक्षमता, उनकी निर्योग्यता को ध्यान रखकर कक्षा अलग न करके उसी कक्षा में विभिन्न संसाधनों को प्रयोग करके सबकों एक साथ शिक्षा देते हैं तो ऐसी शिक्षा समावेशी शिक्षा कहलाती है (4)।

समावेषी शब्द का प्रचलन 1990 के दशक के मध्य से बढ़ा, जब जून, 1994 में सलमान का (स्पेन) में यूनेस्को द्वारा विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं पर विशेष विश्व सम्मेलन 'सुलभता व समता' का आयोजन हुआ। इस सम्मेलन में 92 देशों और 25 अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों ने हिस्सा लिया। सम्मेलन का समापन इस उदघोषणा के साथ हुआ कि, ''प्रत्येक बच्चे की चरित्रगत विशिष्टताएँ, रूचियाँ, योग्यताएँ एवं सीखने की आवश्यकताएँ अनोखी होती हैं अतः शिक्षा प्रणाली में इन विशिष्टताओं और आवश्यकताओं की व्यापक विविधता का ध्यान रखना चाहिए।'' इस सम्मेलन के बाद ही विभिन्न देशों में बच्चों की आवश्यकताओं, रूचियों एवं योग्यताओं को ध्यान में रखकर शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन लाया, शिक्षा में यही परिवर्तन समावेशित शिक्षा के रूप में प्रचलित हुआ (7)।

शिक्षक उस दीये की भाँति होता है जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देता है अर्थात शिक्षक ज्ञान के द्वारा दूसरों को प्रकाशवान करता है। शिक्षक को ही शिक्षा पद्धति की वास्तविक गत्यात्मक शक्ति तथा शैक्षिक संस्थानों की आधारशिला माना गया है। यद्यपि यह बात सत्य भी है कि विद्यालय भवन, पाठ्यक्रम, पाठ्य सहगामी क्रियाएँ, शिक्षण सहायक सामग्री आदि सभी क्रियाकलापों का भी शैक्षिक प्रक्रिया में महत्वपूर्ण स्थान होता है, परन्तु शिक्षक ही वह शक्ति है जो प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सबसे अधिक प्रभावित करता है।

समावेशी शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत शिक्षकों की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है क्योंकि समावेशी शिक्षा व्यवस्था में अध्यापक खुद को केवल अध्यापन तक ही सीमित नहीं रखता, बल्कि विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकता वाले बालकों का कक्षा में उचित ढंग से समायोजन करना, उनके लिये विशिष्ट प्रकार की शिक्षण सहायक सामग्री का निर्माण करना, विद्यालय के शिक्षण व शिक्षेणत्तर कर्मचारियों, अभिभावकों व विशिष्ट अध्यापकों से बालकों की विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये सहयोग व सहकारितापूर्ण व्यवहार करना, बालकों को मिलने वाली आर्थिक सुविधाओं का वितरण करना आदि कार्य भी करने पड़ते है। इसलिये अध्यापक से यह अपेक्षा की जाती है कि वह पूर्णतः निपुण हो, उसे विशिष्ट शिक्षण सहायक सामग्री की जानकारी हो, बालकों के प्रति स्वस्थ व सकारात्मक अभिवृत्ति रखता हो व उनके मनोविज्ञान को समझता हो (2)।

2- leko'kh f'k{kk l f'k{kdk dk ykHk

समावेशी शिक्षा से सामान्य शिक्षकों को बहुत लाभ होता है। जिसे निम्न प्रकार समझा जा सकता है –

1. समावेशित शिक्षा से सामान्य शिक्षक यह स्वीकार करने लगते हैं कि सभी विद्यार्थियों में कुछ ना कुछ गुण होते हैं और ये गुण मिलकर एक अच्छी कक्षा के निर्माण में सहायक होते हैं जिससे शिक्षक को कक्षा प्रबन्ध में आसानी होती है (10)।
2. समावेशित शिक्षा से सामान्य शिक्षकों में यह जानकारी उत्पन्न होती है कि व्यक्तिगत विभिन्नता क्या है, तथा कैसे अलग–अलग लोगों से अलग–अलग व्यवहार करके एक अच्छा कक्षीय वातावरण बनाया जाए।
3. समावेशित शिक्षा के कारण सामान्य शिक्षक विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को पढ़ाने के लिए नयी – नयी शैक्षिक तकनीक सीखता है, जो उसकी कक्षा के सभी विद्यार्थियों के लिए लाभदायक होती हैं।
4. समावेशित शिक्षा में विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए परम्परागत शैक्षिक प्रणालियों (जैसे व्याख्यान विधि, नोट लिखना) का प्रयोग उपयुक्त नहीं होता है, अतः सामान्य शिक्षक अपनी परम्परागत शैक्षिक प्रणाली को छोड़कर रचनात्मक तथा नयी शैक्षिक प्रणाली से अपने कक्षा में पढ़ाता है, जिससे उसी कक्षा के सभी विद्यार्थी रूचिपूर्वक शिक्षा ग्रहण करते हैं।
5. समावेशित शिक्षा सामान्य शिक्षक को सामूहिक कार्य कौशल विकसित करने का मौका देती है (10)।
6. सामान्य शिक्षक समावेषित शिक्षा के कारण विभिन्न प्रकार के प्रोफेशनल्स जैसे – मनोवैज्ञानिक, विशेष शिक्षक आदि से मिलता है, जिससे उसके ज्ञान में भी वृद्धि होती है।
7. सामान्य शिक्षक जो समावेषित शिक्षा अथवा समावेशित स्कूल में कार्य करते हैं उनमें समस्या समाधान कौशल, समस्या को अलग तरह से सोचने का कौशल तथा मनोबल बढ़ाने का कौशल पाया जाता है (10)।

8. सामान्य शिक्षक को समावेशित शिक्षा में रहकर प्रत्यक्ष व्यक्तिगत अनुदेशन का महत्व पता चलता है।
9. समावेशित शिक्षा में कार्य करने वाला शिक्षक विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की आवश्यकता को समझकर उसे अपने दूसरे साथियों के साथ बाँटता है जिससे ऐसे बच्चों के प्रति फैली गलत धारणाएँ कम हो जाती हैं।
10. सामान्य शिक्षक विभिन्न प्रकार के विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के सम्पर्क में रहता है, जिसका प्रभाव समाज पर भी पड़ता है। समाज में भी वह किसी के साथ भी आसानी से रह सकता है।

सामान्य शिक्षा वाले अध्यापकों को विशेष आवश्यकता वाले बालकों के साथ कार्य करने से पहले पूर्व सेवा स्तर पर ही खुद को तैयार करना चाहिये (8)। वे शिक्षक जो विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को अपनी जिम्मेदारी समझते है, ज्यादा क्षमताशाली व प्रभावशाली होते है (3)।

3- f'k{kd f'k{kk l: lEcfU/kr eqís

समावेशित शिक्षा के क्षेत्र में कई शिक्षाशास्त्री इस बात पर बल देते हैं कि कक्षा में समावेशित शिक्षा कार्यान्वयन में अध्यापक शिक्षा एक महत्वपूर्ण घटक है (1)।

भारत में सामान्य अध्यापक शिक्षा के लिए डिप्लोमा और डिग्री कोर्सेस देश भर में फैले है, उसमें एक ऐच्छिक पेपर 'विशेष आवश्यकता' होता है जिसका उद्देश्य होता है कि विकलांगता को पहचानने एवं निदान करने के लिए अध्यापकों को तैयार करना। फिर भी यह प्रशिक्षण का अनिवार्य भाग नहीं होता, तथा यह अध्यापक को यह प्रशिक्षण नहीं देता है कि विभिन्नताओं के साथ कैसे व्यवहार किया जाये तथा विकलांग के प्रति नकारात्मक मनोवृत्ति को कैसे समाज से हटाया जाये (9)।

अध्यापक शिक्षा के ऐसे तरीके ही विशेष आवश्यकता वाले बच्चे को सामान्य बच्चे से भिन्न कर देते है, तथा यह धारणा बन जाती है कि ऐसे बच्चों को वही अध्यापक पढ़ा सकते हैं जो विशेषतः ऐसे बच्चों को पढ़ाने में सक्षम नहीं है, तथा उन्हें इन बच्चों को पढ़ाने के लिए कुछ और समय चाहिए (6)।

अतः अगर समावेषित शिक्षा का सफलतापूर्वक संचालन करना है, तो सामान्य अध्यापक के प्रशिक्षण के कोर्स में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के बारे में विस्तृत जानकारी देनी होगी तथा उन्हें ऐसे प्रशिक्षत करना होगा कि उन्हें ही ऐसे बच्चों को पढ़ाना है कोई अलग अध्यापक विशेष प्रशिक्षण लेकर नहीं आयेगा।

4- lnHk l ph

[1] ऐन्सको, एम0, "फ्रॉम स्पेशल एजुकेशन टू इफैक्टिव स्कूल फॉर आल"। कीनोट प्रैजैन्टेशन एट द इन्क्लूसिव एण्ड सर्पोटिव एजूकेशन कांग्रेस, यूनिवर्सिटी ऑफ स्ट्रथक्लेड, ग्लासो, 2005।

[2] कुमार (2015), "विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकता वाले बालकों की शिक्षा"। (ऑनलाइन) उपलब्धः www.rachranakar.org.

[3] जॉर्डन, ए0,; श्वार्टज, ई0.; रिचमण्ड, डी0 एम0, "प्रीपेयरिंग टीचर्स फॉर इनक्लूसिव क्लासरूम्स"। टीचिंग एण्ड टीचर एजूकेशन, अंक 25, 2009, पृष्ठः 535 – 592।

[4] फेसबुक (2016). "शिक्षण शास्त्र – क्या आप जानते हैं कि समावेशी शिक्षा क्या होती है?" (ऑनलाइन) उपलब्धः www.faceook.com/ permalink. php%3 Fst…..

[5] बूथ, टी0 के0; स्ट्रामस्टैड, एम0, "डेवलपिंग इन्क्लूसिव टीचर एजूकेशन :ड्राइंग द बुक टुगेदर "। लन्दन, रोटलेज फलेमर, 2003।

[6] मुखोपाध्याय, एस0, "रीचिंकिंग एबाउट इन्क्लूजन : इमर्जिंग एरिया फॉर पॉलिसी रिसर्च"। नई दिल्ली, न्यूपा, 2005।

[7] रंजन, आर0, "शिक्षा के नूतन आयाम "। हल्द्वानी, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय , 2012।

[8] सिन्हा, डी0 के0 (2006). "प्रीपेयरिंग जनरल ऐजूकेशन टीचर फॉ इनक्लूजन"। शिक्षक शिक्षा विभाग की विशिष्ट बालक परिषद तथा द्वितीय वार्षिक तकनीकी व मीडिया विभाग की 29वीं प्वाइन्ट कॉन्फ्रेन्स में प्रस्तुत पत्र। सेन डीगो, सी0ए0 नवम्बर 2006.

[9] सिंगल, एन0 (2005). "रेसपांडिंग टू डिफरेन्स : पॉलिसीज टू सपोर्ट इन्क्लूसिव एजूकेशन इन इंडिया ", पेपर प्रेजेन्टिड एट द इन्क्लूसिव एण्ड सर्वोटिव एजूकेशन कांग्रेस, 2005, यूनिवर्सिटी ऑफ स्टेथ क्लेड, ग्लोसो।

[10] uni.edu (1999). "बेनिफिट्स ऑफ इन्क्लूसिव क्लासरूम फॉर आल"। (ऑनलाइन) उपलब्धः http://www.uni.edu/coe/inclusion/philosophy/benefite.html.